बुन्देली भाषा रचित :

हँसै-हँसाबै सोई जिन्दगी

(प्रयुक्त उर्दू बहरों एवं शब्दार्थ सहित ग़ज़लें)

डॉ. श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम'

Scanned with OKEN Scanner

पुस्तक	बुन्देली भाषा रचित : हँसै-हँसावै सोई जिन्दगी (प्रयुक्त उर्दू बहरों एवं शब्दार्थ सहित ग़ज़लें)
रचयिता	श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम'
रचना पूर्ण	सन् 2019 ई. (रक्षाबन्धन, सं0 2076 वि.)
संस्करण एवं प्रकाशन	प्रथमवार, 2019 ई. प्रतियाँ – 500
सर्वाधिकार	रचनाकाराधीन
प्रकाशन तत्वावधान	बुन्देली साहित्य एवं संस्कृति सेवा संस्थान, उरई (जालौन) उ.प्र. – 285001
प्राप्ति स्थान एवं सम्पर्क	1001 A, श्रीवास्तव निलय, चुर्खी रोड, (सरकारी ट्यूब वैल के पीछे गली) बघौरा, उरई, जिला–जालौन (उ.प्र.) – 285001 मोबाइल : 7408439308
आवरण सज्जा व मुद्रक	नाइस ग्राफिक्स, उरई
मूल्य	₹ 170

HANSAI-HANSABAI SOI JINDAGI

BY

SHYAM BAHADUR SRIVASTAVA

Scanned with OKEN Scanner

हँसै-हँसाबै सोई जिन्दगी

(प्रयुक्त उर्दू बहरों एवं शब्दार्थ सहित ग़ज़लें)

रचनाकार : श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम'

अनुक्रम

सं. क्र.	विवरण	पृष्ठ/ग़ज़ल क्रमांक
1.	थोथे आदर्श और सामाजिक विद्रूपताओं के धुँधें को चीरती हुई ग़ज़लें - डॉ. रसूल अहमद 'सागर'	vii
2.	विविध विधाओं के रचनाकार 'श्याम' - डॉ. रामकृपाल 'कृपाल'	ix
3.	'हँसै-हँसाबै सोई जिन्दगी' कृति पर प्रतिक्रिया - डॉ. इन्द्रपाल सिंह परिहार 'अभय'	xi
4.	हँसै-हँसाबै सोई जिन्दगी : स्वकथन - डॉ. श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम'	xii xiv
5.	साभार टिप्पणियाँ	
	ग़ज़लें (हिन्दी वर्णमाला क्रम)	
*	अ से अ: तक	48
6.	अपनें गाँव सरसुती आई, बे सब सोबें	53
7.	अम्मा कौ जिन दूद लजइयो	39
8.	अरमानन की फूँकी होरी और चले	51
9.	अपने गीत कियै का दैहैं हम का कह दें	35
10.	आएते अकेले हम जबऊआ अकेले हैं	21
11.	आग लगी घर-घर देखौ को आय बुजाउत	24
12.	इकदिन काया जा नस जानें	28
13.	इक दिन अरथी पै धर जानें	37
14.	इतइँ गड़ौ है अपँवँ नरा हम कितउँ न जैहैं	54
15.	ऊँट चड़कें न मलकौ, लला	

Scanned with OKEN Scanner

16.	ऐंन हमाओ घर पै बामें घुसनउँ तक न दओ	17
17.	औगुन सबके भाखत दद्दा	4
*	क से घ तक	
18.	काउ अरी नें तिलगा डारौ है सरसोंरा में	44
19.	का कयँ हम तौ रोज इतै साँपन सें लड़ रए	40
20.	कायकों अरे गोरी! अकट बार कर डारौ	8
21.	खेत भर जात है चरौ भइया	59
22.	गाँव साँपन कौ जितै हम रह रये जू !	20
23.	घर-घर मटया चूले भइया!	14
*	च से झ तक	
24.	चल रइ मनमानी जबरन की	3
25.	जब पहरेदारइ सो जाबें ईऐ का माँनें	29
26.	जब देखौ तब करत इतै लड़बे की बातें	46
27.	जो और के दुख में दुखी इंसान बौइ है	31
28.	ज्वानी अत करवाबै, लल्लू!	55
*	त से न तक	
29.	दर्द हैं कछू ऐसे हम जिनें न कह पाबें	11
30.	देखी और सुनी भोगी सो हमनें कह डारी	50
31.	देखौ चाल-चलन उनकौ सबरे भए चौकन्ना	43
32.	न्याय के घर मेंइँ कउँ उतपात पल रव	23
*	प से म तक	
33.	प्यार करबौ हमें न आ पाओ	26
34.	प्यार के ढोल बजाबै दुनिया	19
35.	पाँनी प्यासे कों न पिबाबें	15
36.	बचियो बहना! उतपातन सें	56
37.	बलि माँगे जो भोग में, कहियो जिन भगवान	10
38.	बातन भर सें काम नँइँ चलत सबरे जानत	12
39.	बिकट जमानों आ गव लल्लू	33

Scanned with OKEN Scanner

40.	बिना सोचें बिना घोकें न बोली बात ओ लल्लू !	2
41.	बिरथाँ मद में नर इतरावै	32
42.	बिरलेई पूजत हंसन खों	6
43.	बुलबुलन कों फुदकबे सें काय रोकत!	16
44.	बे न चूकत यार! अपने दाव पै	9
45.	बैठें-बैठें खाबें लल्लू	7
46.	बे तौ अपनें घर में बैठे सब व्योपार करें	42
47.	बोउत-बोउत बीजा आदरसन के खतम भये	18
*	य से ज्ञ तक	
48.	रोजई बुलावें हम तुम न काय आउत हौ	25
49.	लगत हमें अब यार! इतै तौ सबई रोगी हैं	49
50.	अम्मा कौ जिन दूद लजइयो	53
51.	लगा कें आग पाछें खुद बुजाउँन जात हैं भइया!	22
52.	लबरा लड्डुआ खाबें लल्लू!	13
53.	लच्छ पानें अगर तौ रुकौ ना झुकौ	58
54.	लात पनइँयाँ गारीं सह रए उनपै थू-थू	47
55.	लिखित भओ आदेस हमें जू! काम सई करनें है	27
56.	लीक छोड़ मन मतंग काय चल उठौ!	38
57.	लेबें ऊँटै चड़ मलकइँयाँ	57
58.	सब कत मन सें सबल न कोऊ	30
59.	समरथ की हम का कै देबें	5
60.	साजन! घर-घर मटया चूले	34
61.	हक्कइ तौ माँगत कुरता की बाँहें काय सकोरत!	45
62.	हम अपनों कसमीर कहौ जू दै दें कैसें!	36
63.	हँस मुस्का कें जो कट जाबै सोई जिन्दगी	1
64.	हाय! घरइ में नाँगफनी की क्यारी बोय दई	41
65	श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम' संक्षिप्त व्यक्तित्व एवं कृतित्व (परिचय)	60

Scanned with OKEN Scanner

डॉ. श्याम बहादुर श्रीवास्तव 'श्याम'

Scanned with OKEN Scanner